# पत्र

अक्षर पर्व का जून 14 का शेक्सपियर विशेषांक काफी देर से पढ़ने को मिला। प्रसन्नता हुई यह देखकर कि हिन्दी की एक पत्रिका ने अंग्रेजी के महान नाटककार को इस प्रकार की श्रद्धांजलि दी है। शेक्सपियर के कई पहलुओं पर विद्वतापूर्ण लेख पढ़ने को मिले। लेकिन शेक्सपियर की महान लोकप्रियता का एक हास्यास्पद और मनोरंजक पहला अछूता रह गया। शेक्सपियर हिन्दी फिल्म निर्माताओं और लेखकों के पूर्वज थे। दुनिया में जो कहीं नहीं होता वह या तो शेक्सपियर के सुखांत नाटकों में होता है या हिन्दी फिल्मों में। चार सौ वर्ष पूर्व शेक्सपियर ने जैसी असंभाव्य परिस्थितियां निर्माण की थी वे विश्वास से परे लेकिन मनोरंजक थीं। हिन्दी फिल्मों में पुरुष वेश में स्त्री ऐसी ही एक परिस्थिति है। मर्चेन्ट ऑफ वेनिस में पोर्शिया पुरुष वेश में राजा के दरबार में आती है लेकिन कोई उस पर स्त्री होने का शक नहीं करता। यहां तक कि उसका पति भी उसे पहचान नहीं पाता। शेक्सपियर की कॉमेडीज में विचित्र लेकिन मनोरंजक युक्तियां हैं जो हिन्दी फिल्मों में आई हैं। पिता की पसंद के अनुरूप विवाह न करने पर जीवनभर विवाह न करने की कसम रूप बदलकर फिल्मों में आई है। जुड़वां भाई-बहन का बिछुड़ना, लास्ट एंड फाउंड थ्योरी बनकर फिल्मों में आया। विशुद्ध वैज्ञानिक और बुद्धिवादी दृष्टिकोण रखने वाले विद्वान भी मनोरंजन के लिए असंभाव्य घटनाओं को हिन्दी फिल्मों में शेक्सपियर के नाटकों में स्वीकार कर लेते हैं।

हिन्दी के साहित्यप्रेमियों के लिए शेक्सपियर पर इतने अधिक विश्लेषणात्मक लेख एक ही अंक में पिरोने के लिए अभिनंदन।

**-प्रकाश गुप्ते, द्वारा- अभिजित गुप्ते**
**ई-ो1, सेटेलाईट गार्डन, फिल्मसिटी रोड**
**गोरेगांव (पूर्व) मुंबई-4े69**



प्रतिष्ठित अक्षर पर्व का नव वर्ष अंक प्राप्त हुआ, आभार। हमेशा की भांति यह अंक भी सम्पूर्ण मनोयोग के साथ पढ़ा। प्रस्तावना के अंतर्गत कवि मलय जी के सद्यप्रकाशित कविता संग्रह -असंभव की आंच के बहाने आपने उनके व्यक्तित्व और जीवन संघर्षों पर जो प्रकाश डाला है, उसे पढ़ना-समझना काफी रोमांचक है। 85 वर्ष की उम्र में जिस ऊर्जा के साथ वे अपने रचना कर्म से जुड़े हुए हैं, उसे प्रणाम करते हुए उनके सुदीर्घ-सक्रिय जीवन की कामना करता हूँ। अरसे बाद जयनन्दन जी को पढ़ना भी अत्यंत सुखद लगा। उनकी कहानी ने खूब प्रभावित किया। आर्ट का पुल, लड़की बिकाऊ नहीं है कहानियाँ भी मन पर प्रभाव छोडती हैं। बलदेव वंशी, शैलेंद्र, विजेंद्र और प्रेमशंकर रघुवंशी की कवितायें, प्रभाकर चौबे का व्यंग्य तथा भारत यायावर का आलेख अपनी-अपनी तरह से पठनीय और मननीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए हमारी अशेष शुभकामनायें स्वीकारें।

**-जय चक्रवर्ती**
**मो.-983966569**

---

अक्षरपर्व का जनवरी अंक मिला। एक दिन में पूरा अंक पढ़ गया। इस बार श्री ललित सुरजन जी प्रस्तावना भी नए ढंग की है। मान्य. स्व. श्री अशोक सकसेरिया जी पर मार्मिक सामग्री आप ने दी है। अब ऐसे लोग कहां हैं? लोग तो अब चाय पिलाने के लिए भी कतरा जाते हैं । अपने माता-पिता की अवज्ञा नहीं, सिर्फ दुत्कारना करते हैं। उनके इस लेख से सबक लेना चाहिए। डॉ. रमेश चंद्र महरोत्रा जी पर भी गुनने लायक सामाग्री आप ने दी है। दरअसल, संस्कृत व्याकरण को आंशिक रूप से हिंदी भाषा पर लादने से गड़बड़ी होती है। बिहार के लोग कई शब्दों को पुल्लिंग लिखते हैं। कुछ तो जनप्रयोग के कारण भी उलट-सुलट हो जाते हैं। सन् 1966 में हिंदी वर्तनी का मानकीकरण किया जा चुका है, जिससे हिंदी पढ़ने-लिखने वालों की समस्या आसान हो चली है।

वैसे महाराष्ट्र में धर्मयुग पत्रिका हर घर की मानक पत्रिका थी। अब वैसी कोई पत्रिका नहीं है। परिदृश्य प्रकाशन, दादा संतूक लेन, मरीन लाइंस, मुंबई-2, सस्ता साहित्य मंडल एवं ए.एच. व्हीलर के माध्यम से अक्षरपर्व इस खाली जगह की पूर्ति कर सकती है।

**- रतिलाल शाहीन , गोरेगांव पश्चिम, मुंबई-4ो4, मो.9ो2152789**

---

अक्षरपर्व के नवंबर, दिसम्बर 14 व जनवरी 215 अंक अद्भुत रहे। मनोयोग से पढ़ता रहा। उत्सव अंक सचमुच साहित्यिक उत्सव का भान कराता है। लोक संस्कृति का अनूठा वर्णन बड़ा दिलचस्प है। पूर्व राष्ट्रपति कलाम की कविता दिसम्बर अंक में पढ़ कर कविहृदय का परिचय पाकर बहुत अच्छा लगा। जनवरी अंक में साहित्यकार अशोक सेकसरिया एवं डा.रमेशचंद्र महरोत्रा का स्मृतिवर्णन सार्थक एवं प्रेरणादायक लगा। साथ ही भारतेन्दुजी के भारत भिखारी संदर्भ लेख में बहुत सी सूचनाएं महत्वपूर्ण हैं, जो अभी इतनी ज्ञात नहीं थीं ।

**-गिरीशचंद्र चौधरी, भारतेन्दु भवन, चौखम्भा, वाराणसी-22ो1**